मान का घटना बढ़ना

संयुक्ता और सुभाष शर्मा का दाम्पत्य जीवन मुहल्ले वालों के लिए खोज का विषय बन गया था। उनके तीमंजिले फ्लैट में ऊपर-नीचे रहने वालों ने दोनों में से किसी की ऊँची आवाज कभी नहीं सुनी। बाजार या शादी विवाह में दोनों साथ ही नहीं जाते; बल्कि सुबह और शाम सैर भी दोनों साथ-साथ करते। अब तो बच्चे बड़े हो गए थे, उनके घोंसले से तीन जोड़ी चिड़िया उड़ गई। पहले बेटियाँ विदा होती थीं , अब अधिकांश घरों से बेटे भी अपनी जोड़ी बनाकर विदा होने लगे। संयुक्ता के तीनों पिजड़े खाली हो गए। सात फेरे लेकर जिस दाम्पत्य की शुरुआत हुई थी, वह भी अब प्रौढ़ावस्था में आ गया। तीनों बच्चे हिरण, हरि और हिना के बीच दो-दो वर्ष की ही छोटी थी। तीनों समय पर ब्याह दिए गए। वे भी अपनी जगह खुश और शर्मा दम्पत्ति भी संतुष्ट। उस बिल्डिंग के लोगों को स्मरण था कि बच्चों के लालन-पालन, पढ़ाई-लिखाई से लेकर उनके शादी-ब्याह तक भी शर्मा दम्पत्ति के बीच कभी तू-तू , मैं-मैं नहीं हुई। पड़ोसियों की स्मृति ताजा रहने के पीछे यह भी एक कारण था कि वे अक्सर आपस में झगड़कर पछताते और बैठकर सोचते- ''क्या कारण है कि शर्मा दम्पत्ति के बीच कभी लड़ाई नहीं हुई ? कभी तो पूछेंगे उनसे।''

पड़ोसियों के बीच भी इस बात की चर्चा होती और चर्चा का अंत इसी सहमति बनने पर हो जाती कि कभी बैठकर उन्हीं दोनों से कारण जाना जाएगा। सुभाष शर्मा के अवकाश प्राप्ति के एक वर्ष बीत गए। उन्होंने वह समय तो दिनभर साथ-साथ रहकर बिताए। सुभाष ने स्मरण दिलाया- ''तुम्हें याद है, अवकाश प्राप्ति के बाद हमने विदेश यात्रा का प्लान बनाया था। अब तो एक वर्ष बीत गए। मैंने इसीलिए दोनों के पासपोर्ट भी बनवा लिया था। अब जहाँ चलने का विचार हो, बताओ। टिकट लेने, उस देश का वीजा बनवाने में भी समय लगेगा।''

दोनों ने विचार कर 23 मार्च, 2020 का समय निर्धारित किया। संयुक्ता का मन जापान घूमने का ही था। सुभाष ने भी हामी भर दी। वीजा के लिए जापान एम्बैसी में आवेदन दे डाला। सब काम समय से ही पूर्ण हुआ।

संयुक्ता को कानपुर अपने मायके गए दो वर्ष बीत गए थे। उसने अपने पति से कहा- ''मैं इस बीच कानपुर से हो आऊँ? अभी तो जापान जाने में तीन हफ्ते बाकी है। मैं सिर्फ एक सप्ताह ही वहाँ रहूँगी। इस बीच माला घर की साफ-सफाई , कपड़े-बर्तन धोने के साथ-साथ आपका खाना भी बना देगी। सुबह-शाम के लिए दो-दो रोटियाँ तो बनानी है। रात की सब्जी दिन में ही बना जाएगी। आपको चाय बनाना , मैंने अपने विवाह के बाद ही सीखा दिया था। तब से आजतक सुबह की चाय आप ही बनाते हो। सरकारी ड्यूटी से तुम्हारे एक-दो दिनों के लिए बाहर जाने पर मैं चाय नहीं बनाती थी। माला के आने का इंतजार करती थी। उसी के साथ चाय पीती थी। मैं माला को सब सीखा जाऊँगी।''

''अरे! इतना कुछ कहने की क्या जरूरत है। चली जाओ न। ट्रेन से मत जाओ। दो दिन बेकार के जाएँगे। प्लेन का टिकट कटवा देता हूँ।''

घर बैठे-बैठे ही पत्नी के लिए प्लेन का टिकट कंम्प्यूटर के सहयोग से जाने और लौटने की भी कटवा दी। सुभाष बोले- ''तुमने मुझे चाय बनानी सीखा दी , खाना बनाना नहीं। कभी खाना गरम करने की भी तुमसे इजाजत नहीं मिली। अच्छा ही हुआ। तुम्हारे हाथ का स्वादिष्ट खाना खाने से वंचित रह जाता। मेरे जीभ और पेट का विशेष ध्यान रखकर भी तुमने मुझे अपना बंदी बना लिया। '' संयुक्ता के कान पति द्वारा अपनी बड़ाई सुनने के अभ्यस्त हो गए थे। पता नहीं क्यों , आज उसे घनेरो बार दुहराए गए , वही शब्द क्यों अधिक सुहाने लगे ? वह प्रसन्न मन से उन शब्दों की मधुरता निगलती अपना टिकट देखने लगी।

सुभाष अपनी पत्नी के मुख पर आँखे टिकाए उसके भाव निहार रहे थे। टिकट पर जाने और आने की तिथि देख संयुक्ता ने पूछा- ''यह क्या? मुझे वहाँ चार दिन ही रहना है? आपको तो मालूम है कि कानपुर में ही मेरे सभी रिश्तेदार रहते हैं। एक सप्ताह तो लगेगा ही। जा भी तो सालभर बाद रही हूँ।''

संयुक्ता रुआंसी होकर बोली। ''अच्छा। तुम्हें जिस तिथि को लौटना है बता दो? यहाँ लौटकर बाहर जाने का सामान भी ठीक करना है न।''

''हमारा सामान ठीक ही रहता है। उठाय और चल दिए।''

''नहीं। बाहर जाना है न।''

''ठीक है। अभी ही मैं दो अटैचियाँ भर लेती हूँ। हिना को बुला लूँगी। वह भी मदद कर देगी।''

''हिना की भी अपने शहर में विवाह करवा के हमने अपने जीवन के सुख-सुविधा का ध्यान रख लिया। हरिण और हरि पहले ही दूसरे शहर चले गए। फंस गई हीना।''

''आप भी कैसे सोचते हैं। इसमें फंसने की क्या बात है ? दो दिन माँ के पास रहना किसे नहीं अच्छा लगता। अपने घर के कार्यों से छुटकारा भी मिल जाती है।''

''ठीक है।'' पत्नी के सुझाव, विचार और सलाह सुभाष जी को सदा ही कायल कर जाते हैं।''

एक सप्ताह मायके में रहकर संयुक्ता को बड़ा सुखद लगा। दिनभर में चार बार माला से तो आठ बार पति से भी बात हो ही जाती। दोनों से बातचीत का विषय सुभाष जी का भोजन ही होता। माला को तो भोज्य पदार्थ बनाने का ढ़ंग बतियाती और पति से भोजन का स्वाद।

सुभाष कभी माला की प्रशंसा करते कभी कहते- ''ईश्वर ने मेरे लिए तुम्हारे ही दोनांे हाथ बनाए हैं। औरों के हाथ का भोजन करना तो गुजारा करना है। तुमने नाहक आठ दिन मायके में रहने की जिद्द कर ली। छोड़ो। कोई बात नहीं। अब तो तुम्हारे आने में दो ही दिन बचे हैं। 24 मार्च को आ ही रही हो न। 25 मार्च की रात की हमारी टिकटें भी हैं।''

''हाँ, हाँ आ रही हूँ बाबा!''

दो दिन बीतते कितना समय लगता है। वह भी जब इंतजार की घड़ियाँ हो। 23 शाम को प्रधानमंत्री राष्ट्र को संबोधित करने वाले थे। उनके भाषण प्रारंभ होने के 15 मिनट पूर्व ही सुभाष टेलीविजन खोलकर बैठ गए। प्रधानमंत्री ने देश-दुनिया की स्थिति बताते हुए घोषित कर दिया कि 24 मार्च से देश में पूर्ण लॉकडाउन होगा। बाजार, स्कूल, यातायात सब बंद। सुभाष बहुत घबड़ा गए। सर्वप्रथम अपने एक मित्र को फोन किया- ''लॉकडाउन का क्या मतलब हुआ?''

''पूर्ण तालाबंदी। सबको अपने घर में ही रहना है। उनकी जरूरत के सामान घर पहुँचा दिया जाएगा।'' सुभाष शर्मा ने अपना माथा ठोक लिया- ''अब तो न संयुक्ता आ सकती है, न हमलोग जापान जा सकते हैं? अब क्या होगा?''

वे संयुक्ता को फोन करने जा ही रहे थे कि मोबाइल की घंटी बज उठी। संयुक्ता का फोन था। सुभाष जी ने मोबाइल कान में लगाया। संयुक्ता रुँआसी होकर बोली- ''अब क्या होगा? कल से ट्रेन और प्लेन सेवा भी बंद हो जाएगी। विदेश सेवा भी। जो जहाँ है वहीं रुका रहेगा। 21 दिनों तक पूर्ण तालाबंदी।''

''मैं क्या बोलूँ। यह कोरोना हमारे लिए भी काल बनकर ही आया।'' सुभाष को अधिक बातें करने की इच्छा भी नहीं हो रही थी।

दूसरी सुबह माला नहीं आई। मोबाइल पर उसका फोन संदेशा आया- ''साहब मैं 21 मई तक काम पर नहीं आ सकती। कोई भी कामवाली नहीं जाएगी। लेकिन साहब! आपको मेरी तनख्वाह देनी होगी। सरकार ने टेलीविजन पर कहा है।''

सुभाष कुछ नहीं बोले। मोबाइल ऑफ कर दिया। न संयुक्ता आएगी न माला। संयुक्ता के बिना इतना दिन काटना कितना मुश्किल होगा। सरकार को क्या पता।

सुभाष से अधिक परेशान हो गई संयुक्ता। उसकी परेशानी दोनों बड़ी-छोटी भाभियों और भाइयों से भी नहीं छुपी। भाइयों ने उसे पति के पास अहमदाबाद भेजने की बहुत कोशिश की , सब निष्फल। मन मारकर एक को कानपुर तो दूसरे को अहमदाबाद में रहना पड़ा।

सुभाष को जीवन में पहली बार पत्नी से भी बढ़कर माला की उपस्थिति खली। भोजन तो मिल जाता था न। अब क्या होगा?

हिना ने पिता की दिनचर्या के बारे में मोबाइल पर ही चर्चा की- ''पापा। आपके भोजन का क्या होगा ? 21 दिन कम नहीं होते? फिर उसने मैगी, पोहा के साथ कई अन्य व्यंजनों की रेसिपी बताई।''

सुभाष ने मना कर दिया। माला की बनाई दाल और थोड़ी-थोड़ी सब्जियों तथा ब्रेड से दो दिन कट गए। अभी तो 19 दिन बाकी थे। हीना ने पापा की मदद करने के लिए कहा- ''कड़ाही चढ़ाईए। उसमें यह डालिए वह डालिए।'' कहकर भी सिखाना प्रारंभ किया।

संयुक्ता ने भी सब्जी, दाल और चावल बनाना सीखाने की बहुत कोशिश की। सुभाष सुनने के लिए भी तैयार नहीं थे। परंतु जब किचेन में रखा दूध , ब्रेड, फल, चिउड़ा, सब समाप्त हो गया , सुभाष ने कराही चुल्हे पर चढ़ाकर बेटी हिना को फोन किया। हीना बोली- ''हाँ पापा! अब मैं आपको सब्जी बनाने के तरीके बताती हूँ। जैसे-जैसे सामग्रियाँ एक-एक कर कराही में डालना है , मैं बातती जाऊँगी, आपसे पूछती भी रहूँगी कि जीरा , मिर्च, प्याज का कैसा रंग हुआ। एक बात और आप चुल्हे के बर्नर की लौ को हमेशा सिम पर ही रखिएगा।''

''हाँ, हाँ तुम अपना निर्देश तो प्रारंभ करो।''

''आपको भींडी बहुत पसंद है। फ्रीज में है भी। इसलिए आप उसे धोकर पहले पाँच मिनट के लिए धूप में रख दीजिए। फिर पतले कपड़े से पोंछ लीजिए। कराही में एक बड़े चम्मच से तेल डालिए, थोड़ा गरम होने पर उसमें एक चुटकी जीरा, जीरा लाल होने पर प्याज भूनिए , उसके लाल होने पर भींडी डालिए। थोड़ा नमक और थोड़ी हल्दी पाउडर डालकर उसे ऊपर-नीचे , दाएँ-बाएँ घूमा दीजिए। ढ़क्कन से ढकिए। थोड़ी-थोड़ी देर पर ढ़क्कन उठाना , फिर उलटना और फिर ढ़कना, ऐसा करते रहिए। तीन-चार बार यह प्रक्रिया दुहराने के बाद थोड़ी लाल मीर्च और धनिया का पाउडर डालिए। फिर ढ़किए। जब देखने में भिंडी उस रंग की हो जाए जैसा माँ बनाती थीं , फिर चावल, दाल के साथ खाइए।''

सुभाष जी अपने बाएँ हाथ में मोबाइल लेकर कान में लगाए हीना के निर्देश सुन नहीं रहे थे , लिखते जा रहे थे। चावल, दाल बनाना, तो एक दिन पूर्व ही सिखा दिया था। खाकर तृप्त होने पर सुभाष शर्मा ने पुनः बेटी , फिर पत्नी से मोबाइल पर बातें की। संयुक्ता का मानो पेट भर गया हो। इसलिए बड़ी भाभी द्वारा भोजन पर बुलाने के उपरांत ही वह बेटी से बाते कर रही थी।

हीना ने दो-चार दिन ही गुरु की भूमिका निभाई। सुभाष जी भी शिष्य की भूमिका में आ गए थे। संयुक्ता भी कुछ-कुछ सिखाती रही। सुभाष शर्मा का दिन कटता गया। 21 दिनों की ही तो बात थी। 10 दिन निकल भी गए थे।

हीना ने अपने पिता को यूट्यूब पर खाना बनाने की रीति-नीति सिखाई। फिर क्या था , सुभाष जी प्रतिदिन सुबह-शाम अलग-अलग व्यंजन बनाते। पत्नी और बेटी को वाट्सअप पर चित्र भेजते। वे दोनों भी पति और पिता के पेट भरने का समाचार पाकर अघा जातीं। उनके मित्रों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

एक दिन उनके एक मित्र मोबाइल की घंटी सुभाष द्वारा उठाकर 'हेलो' कहते ही बोल पड़े- ''क्या हुआ मित्र, तुम जापान जाकर भाभी के साथ बुढ़ापे का हनिमून मनाने लगे?''

सुभाष जी बोले- ''रवि! हमारे जमाने में हनिमून नहीं जाया जाता था। कोरोना काल और पूर्ण तालाबंदी में अवश्य हनिमून मना रहा हूँ। प्रारंभ में बड़ी परेशानी हुई। संयुक्ता अपने मायके में और मैं अपने घर में हूँ , मैं अकेला नहीं हूँ। इनदिनों पाक-कला का अभ्यास कर रहा हूँ। यूट्यूब और फेसबुक ने कितना कुछ सीखा दिया। सच यह टेक्नोलॉजी ही लॉकडाउन में सहारा है। मैं तो इस बदलती दुनिया का बड़ा विरोधी था। मोबाइल का भी अधिक इस्तेमाल नहीं किया। रिटायरमेंट के बाद बेटी ने सिखा दिया। रवि! कितना उपयोगी है , यह टेक्नोलॉजी। खाद्य पदार्थों की तस्वीर पत्नी दोनों बेटों और बेटी को भी भेज देता हूँ। उनसे भी शाबासी मिलती है।''

''वाह! तुमने कमाल कर दिया।''

''खाना बनाना सीखना तो मेरे मन में आत्मविश्वास जगा दिया है। मेरे मन में पत्नी का स्थान तो और भी ऊँचा हो गया। लेकिन एक बात और मेरे मन में आई।''

''वह क्या?''

''यह कि मैं भी अब पत्नी के बराबर हो गया। मात्र संयुक्ता के पाक-कला में सिद्ध होने के कारण मेरे मन में उसका बड़ा स्थान था। मान था। अपना मान भी बढ़ गया मन में।''

''क्या बात कही, वाह!''

''अब देखो न लॉकडाउन का 21 दिन कट गए। हँसते-हँसते। प्रारंभ में लगा था , एक सप्ताह भी काट नहीं पाऊँगा। आंशिक लॉकडाउन समाप्त होते ही संयुक्ता का मोबाइल दिन-रात मिलाकर बीस बार बजता है। मैं कभी उठाता , कभी नहीं भी उठा पाता हूँ। वह बार-बार आग्रह करती है कि मैं उसको जाकर ले आऊँ। प्लेन और ट्रेन नहीं, तो कार से भी आने को तैयार है। मैं कहता हूँ, थोड़े दिन और रुको। अभी लॉकडाउन हटा है। कोरोना नहीं।

रवि ने कहा- ''नहीं सुभाष! पत्नी के प्रति मान या प्यार केवल उसके भोजन बनाने से नहीं घटता-बढ़ता। और भी कई कारण हैं। अब तुम भाभी को और नहीं तड़पाओ। शीघ्र बुला लो।''

''थोड़े दिन और अपने प्रति बढ़े हुए, मान को तो आत्मसात कर जीने दो।''

''वाह! पति-पत्नी के बीच क्या मान-अपमान।''

''यही तो बात है। मैं उसे कह रहा हूँ। कुछ दिन और कानपुर में रूक जाओ। इतने दिन बाद मायके गई है और अब तो शायद जापान की ट्रिप भी कैंसिल ही है। वह मानती नहीं।''

वो सब तो ठीक है लेकिन पहले भाभी को अब बुलाओ और अब कुछ दिन अपने हाथों से बनाकर खिलाओ। बुढ़ापे की प्रीत और बढ़ेगी।

दोनों के ठहाके के साथ फोन डिस्कनेक्ट कर सुभाष संयुक्ता को वापस लाने की तैयारी की खबर सबसे पहले संयुक्ता को फोन मिलाते हैं। उधर से कोई बात सुनने के पहले ही कहते हैं मैं आ रहा हूँ , तैयारी कर लो। संयुक्ता खुशी-खुशी जाने की तैयारी कर रही है। मानो एक बार फिर उसकी विदाई हो रही है।

- स्व. मृदुला सिन्हा (पूर्व राज्यपाल, गोवा)